

क्या है आनंद विभाग का 'अल्पविराम'

अल्पविराम आनंद विभाग द्वारा संचालित एक ऐसी पहल है, जिसके माध्यम से शासकीय विभाग के अधिकारियों-कर्मचारियों के जीवन में सकारात्मक स्नेह का विकास किया जा सकेगा। जैसा कि कहा जाता है - आनंद की अनुभूति का हम पीछा नहीं कर सकते। आनंद तो स्वतः अंतर में ही रहता है। अल्पविराम कार्यक्रम का रोमांच इस खोज में है अतः शासकीय विभाग के अधिकारियों-कर्मचारियों को इसका अनुभव कराते हुए इस मार्ग पर सतत रूप से चलने के लिए उन्हें प्रेरित करने हेतु अल्पविराम पहल की शुरुआत की गई है।

शहत समय में अंतरात्मा की आवाज को सुनना एक अभ्यास है, जो इस प्रक्रिया को दृढ़ बनाता है। यह एक प्रकार का अल्पविराम है, जिसके माध्यम से हम स्वयं दिग्ग और मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। शासकीय सेवक यदि स्वयं आनंदित है तो वह दूसरों को भी आनंदित रहने का मार्ग प्रशस्त कर सकेगा। कार्यलय में उनके द्वारा किए गए कार्य इस बात का प्रमाण हो सकते हैं कि वे किस तरह का जीवन जी रहे हैं।

शासकीय कार्यलयों में कार्यरत अधिकारियों-कर्मचारियों में सकारात्मक स्नेह विकसित करने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक है। इसका लोक सेवकों के प्रभावी प्रबंध तथा प्रदान से सीधा संबंध है। भौतिक सुविधाएं तथा समृद्धि अकेले आनंदपूर्ण मन-स्थिति का कारण नहीं होती। यह आवश्यक है कि प्रशासनिक अधिकारियों-कर्मचारियों का दृष्टिकोण जीवन की परिपूर्णता की मौलिक समझ पर आधारित हो। शासकीय सेवकों को उनके कार्यस्थल पर ही निर्मित अंतराल पर ऐसे कार्य तथा क्रियाओं में सम्मिलित किया जाए, जो उनके जीवन में आनंद का कारण बन सकें।

अल्पविराम पहल के अंतर्गत आनंद विभाग का यह प्रयास है कि ऐसे स्वयं सेवक (आनंदम् सहयोगी) तैयार किए जाएं, जो कार्यलयों में सकारात्मक जीवनशैली अपनाने की आवश्यक विधियां उपलब्ध करा सकें। आनंदम् सहयोगी अशासकीय व्यक्ति अथवा शासकीय अधिकारी-कर्मचारी हो सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों को जिन्होंने संस्थान की वेबसाइट पर आनंदक के रूप में पंजीयन कराया था, में से प्रत्येक जिले से तीन-तीन आनंदम् सहयोगियों का चयन किया गया। इसके अतिरिक्त मंत्रालय एवं विभागस्थल कार्यलयों से भी आनंदम् सहयोगी बनाए गए।

इन चयनित आनंदम् सहयोगियों का चार दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम भोपाल में प्रशासन अकादमी एवं कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण संस्थान में आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण लगभग 35-35 आनंदम् सहयोगियों के समूह के रूप में पांच सत्रों में आयोजित किए गए।

उक्त प्रशिक्षण महाराष्ट्र के पंचगनी स्थित इन्विरास्टिब ओक थोज संस्था के प्रतिष्ठकों द्वारा आकर भोपाल में दिया गया। इस संस्था द्वारा

शासकीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों को 'इथिक्स एवं पब्लिक मनेस' नाम से प्रशिक्षण दिया जाता है।

राज्य आनंद संस्थान के अधिकारियों द्वारा 15 सितंबर 2016 को आईओएफसी प्रशिक्षण केंद्र पंचगनी स्थित केंद्र का धरणा किया गया तथा 10 नवंबर को आईओएफसी के विशेष विशेषज्ञों के साथ एक कार्यरत आयोजित की गई, जिसमें अल्पविराम कार्यक्रम की रूपरेखा एवं प्रशिक्षण आदि विषयों पर चर्चा की गई।

इस चर्चा के आधार पर प्रशिक्षण के लिए अल्पविराम प्रशिक्षण मैनुअल तैयार किया गया। इसके आधार पर अब तक कुल 166 आनंदम् सहयोगियों को अल्पविराम आयोजित करने के बारे में प्रशिक्षण दिया जा चुका है, इसमें से 87 आनंदम् सहयोगियों का रिजर्व प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया जा चुका है।



मध्यप्रदेश के 51 जिलों के प्रशिक्षित आनंदक सहयोगियों द्वारा अपने-अपने जिले में कलेक्ट्रेट एवं विभिन्न शासकीय कार्यलयों में अल्पविराम कार्यक्रम के आयोजन निर्धारित अंतराल के पर्याप्त किए जा रहे हैं। उनके द्वारा किए गए कार्यक्रमों का प्रतिवेदन संस्थान की वेबसाइट के माध्यम से प्राप्त किया जा रहा है।

जिला स्तरीय आनंदकों के लिए डेढ़ दिवसीय 'अल्पविराम परिचय' कार्यक्रम के तहत शिबिरों के आयोजन किए जा रहे हैं। इन शिबिरों में अल्पविराम का परिचय आनंदकों को कराया जाएगा। इस कार्यक्रम के तहत जबलपुर संभाग के जिलों के लिए दो अल्पविराम परिचय शिबिर का आयोजन सितंबर 2017 में किए गए हैं, जिसमें आईओएफसी के प्रतिष्ठकों द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया। इन दोनों कार्यक्रमों में जबलपुर संभाग के अठारह जिलों के 190 प्रतिभागियों ने हिस्सेदारी की। इन परिचय शिबिरों में भाग लेने वाले प्रशिक्षणार्थी आनंदक सहयोगी का प्रशिक्षण प्राप्त करने के पात्र होंगे। इस प्रकार के अल्पविराम परिचय कार्यक्रम अन्य संभागों में भी आयोजित किए जा रहे हैं।

राज्य आनंद संस्थान द्वारा पंचगनी, पुणे स्थित संस्था आईओएफसी के साथ नियमित एमओयू के अंतर्गत मास्टर ट्रेनर्स की सेवाएं भोपाल में ली जा रही हैं। ये मास्टर ट्रेनर्स प्रदेश के जिलों, शासन के विभागाध्यक्ष कार्यलयों में होने वाले आनंद विभाग के कार्यक्रमों, आनंद सभा, आनंद क्लब आदि में सहयोग प्रदान करने तथा जिलों के आनंदक सहयोगी, आनंदकों तथा मोडल अधिकारियों से संसर्क में रहकर उन्हें मार्गदर्शन प्रदान करने का कार्य कर रहे हैं।

- आनंद विभाग द्वारा प्रकाशित पुरतक से संकलित संकलन :
डॉ. समीरा नईम, राज्य आनंद विभाग समन्वयक